ग्रेटर नोएडा-उ.प्र.। इंटरनेशनल सम्मिट ऑन टोबैको कंट्रोल में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए जगत प्रकाश नड्डा,मिनिस्टर ऑफ हेल्थ। साथ हैं ब्र.कु. प्रीति, डॉ. अरुण कुमार पंडा,एडिशनल सेक्रेट्री,हेल्थ, अमल पुष्प,डायरेक्टर,एन.टी.पी.सी., डॉ. सचिन परब, डॉ. जगदीश प्रसाद,डायरेक्टर जेनरल ऑफ हेल्थ सर्विसेज़ तथा डॉ. बनारसी लाल शाह।

मुरादाबाद-उ.प्र.। टी.एम.आई.एम.टी. कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट के ऑडिटोरियम में 'बीइंग पॉज़ीटिव-नो मैटर वॉट' विषयक कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. डॉ. सुनीता चंद्रक,पी.एच.डी.,इंटरनेशनल मैनेजमेंट कंसलटेंट, डॉ. उज्जवल कुमार,आई.ए.एस.,सी.डी.ओ., विनीत कुमार,ऑनर,टी.एम.आई.एम.टी. कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट तथा अन्य ब्रह्माकुमारी बहनें।

नूह-हरियाणा। बाल दिवस के कार्यक्रम में नगर पालिका पार्षद कमल गोयल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अल्का। साथ हैं ब्र.कु. संजय हंस।

रादौर-कुरूक्षेत्र। हरियाणा दिवस के मौके पर हरियाणा सरकार के मुख्य संसदीय सचिव श्याम सिंह राणा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. राज बहन। साथ हैं ब्र.कु. राजू।

मनहरि-मकवानपुर(नेपाल)। वृद्ध माताओं के सरल व सुरक्षित जीवन के लिए बनाये गए 'मदर प्रोजेक्ट' के शुभारंभ कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए एक सौ सात वर्षीय वृद्ध माता कृष्णा कुमारी घिमिरे, मुनू सिगदेल, ब्र.कु. सुशीला तथा अन्य।

हे अर्जुन, ये अंधविश्वास नहीं, यह ज्ञान एक विज्ञान है

गतांक से आगे...

अब तक भगवान ने विभिन्न तरीके से अर्जुन को समझाना चाहा कि किस प्रकार अपने मन को वो नियंत्रित कर सकता है। फिर भी अगर उसको कठिन लगे तो कैसे समर्पण भाव को अपनाना ज़रूरी है। परमात्मा हम सभी के सर्व मानसिक बोझ को उठाने के लिए तैयार है। भगवान यही चाहते हैं कि मनुष्य अपना कर्तव्य करते हुए भी, सर्व प्रकार के मानसिक बोझ को उस परमात्मा को सौंप दे। बुद्धि को समर्पण करते हुए अपना नित्य कर्म करता जाये। समर्पण भाव भी तभी आएगा जब ईश्वर का वास्तविक स्वरूप हमारे सामने स्पष्ट हो। इसलिए जैसे अर्जुन भी साधारण स्वरूप में ईश्वर को देख रहा था तो भगवान को बार-बार अपने वास्तविक स्वरूप के तरफ इशारा करना पड़ा कि मेरा वास्तविक स्वरूप सूक्ष्म ते सूक्ष्म, अणु से भी सूक्ष्म दिव्य ज्योतिर्मय प्रकाश स्वरूप है। परमात्मा का जो वास्तविक धाम है वो परमधाम है।

नौवें अध्याय में भगवान ने राजविद्या, गुह्य योग को स्पष्ट किया। आत्मा और परम आत्मा के गोपनीय रहस्य का उद्घाटन इस अध्याय के अंतर्गत किया गया है। पहले श्लोक से लेकर छठें श्लोक तक प्रभाव सहित ज्ञान का विषय बताया गया है।

सातवें श्लोक से लेकर दसवें श्लोक तक कल्प का प्रारंभ और अंत का विषय लिया गया है। कल्प के विषय में बताया कि सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर, कलियुग ये चारो युग मिलकर एक कल्प होता है। कल्प के प्रारंभ और अंत में क्या होता है? उसका विषय स्पष्ट किया गया है।

ग्यारहवें श्लोक से लेकर पंद्रहवें श्लोक तक आसुरी प्रकृति के लोग और दैवी प्रकृति के लोगों की भिन्नता स्पष्ट की गई है।

-ब्र.कु. उषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

सोलहवें श्लोक से लेकर बीसवें श्लोक तक भगवान की तुलना सभी में सर्वोच्च स्वरूप में की गई है। इक्कीसवें श्लोक से लेकर पच्चीसवें श्लोक तक सकाम और निष्काम उपासना का फल और छब्बीस से चौतीसवें श्लोक तक निष्काम भगवत् भक्ति की महिमा और मनमनाभव, मध्याजीभव होने की प्रेरणा दी है।

सर्वप्रथम भगवान यही बात स्पष्ट करते हैं कि हे अर्जुन! इस परम गोपनीय ज्ञान को भी मैं ज्ञान सहित कहूंगा। अर्थात् ये ज्ञान कोई अंधविश्वास का ज्ञान नहीं है, लेकिन ये ज्ञान एक विज्ञान है। जहाँ हर बात के पीछे कोई न कोई रूप से तर्क स्पष्ट किया गया है। यह ज्ञान सभी विद्याओं का राजा है। इसी-लिए उसको राजयोग कहा जाता है।

संसार में ज्ञान की अनेक शाखायें हैं, लेकिन उन सभी विद्याओं का राजा राजयोग को कहा गया है। यह गोपनीय रहस्यों से भी अधिक गोपनीय है। ये परम पवित्र ज्ञान है। क्योंकि ये स्व की प्रत्यक्ष अनुभूति का बोध कराता है। यह धर्म का भी आदर्श है। यह स्थायी तथा प्रसन्नता पूर्वक धारण किया जाने वाला है। यह ज्ञान प्रैक्टिकल से प्रैक्टिकल है। जिसके लिए कोई ये नहीं कह सकता है कि ये ज्ञान धारण करना मेरे लिए मुश्किल है। मुश्किल नहीं है लेकिन जो इस रहस्य को समझता है तो उसके लिए धारण करना आसान हो जाता है।

भगवान अपनी कार्य करने की प्रणाली के विषय में बताते हुए कहते हैं कि मैं अव्यक्त स्वरूप हूँ, और मेरी कार्य प्रणाली अलौकिक है। फिर से भगवान गुप्त रूप में इशारा दे रहे हैं। अभी तक भी वो अव्यक्त को समझ पाने की क्षमता नहीं रख पाता है। जैसे आज की दुनिया में कई बार कई लोग यही सोचते हैं कि अव्यक्त को कैसे हम समझें। तो इसीलिए भगवान अपने कार्य के आधार पर भी अपने स्वरूप को स्पष्ट करते हैं कि मेरी कार्य प्रणाली अलौकिक है। जो भी पदार्थ इस दुनिया में रचे गए हैं, वो मेरे भीतर नहीं हैं। सर्वव्यापकता की भी बात यहाँ स्पष्ट की जा रही है। मैं सभी चैतन्य प्राणियों का पालनहार ज़रूर हूँ। परमात्मा जो हर आत्मा की पालना करते हैं। ये कर्म उनको बांधते नहीं हैं, क्योंकि उनकी उसमें आसक्ति नहीं है। - क्रमश:

मानव आत्म सम्मान... - पेज 2 का शेष

खोजकर खुद को सजग व तरोताज़ा रखता है। बासी होने नहीं देता। मध्यम वर्ग के नौकरी करने वाले मनुष्य बासी बन जाते हैं। जैसे कि सुबह उठना, समाचार पत्र पढ़ना, चाय-नास्ता करना, छोटी-मोटी पूजा करना, हिसाब-किताब करना, भोजन करना, ऑफिस जाना, साथियों के साथ गप-शप करना, थोड़ा सा कार्य करना, बॉस या कार्य साथी की शिकायत करना, बढ़ती महंगाई, भ्रष्ट नेताओं की टीका-टिप्पणी करना, सायं मंदिर में जाकर आना, साग-सब्जी खरीद करना, टी.वी. सीरियल देखना और सो जाना, यही लगभग नित्यक्रम बन जाता है। परिणामस्वरूप वे ज़िंदगी में नवीनता, ताज़गी, उमंग-उत्साह खो देते हैं। बहुत लोगों की जीवन-यात्रा में आई समस्याएँ, परिक्षायें, कठिन क्षणों में 'हाय मर गया', 'सब लुट गया', 'बर्बाद हो गया', जैसी रोने की आदत सी बनी रहती है।

आज मनुष्य वाहन का संतुलन बनाये रखने में कामयाब है लेकिन जीवन का संतुलन बनाये रखने में कमज़ोर है। जीवन में दु:ख तो आयेंगे ही, लेकिन दु:ख के क्षणों में स्वस्थ रह दु:ख का सामना करना, ये आधारभूत शिक्षा है। जीवन कैसे जीना है ये भी एक कला है। परंतु ये कला भी उधार लेने का शौक मनुष्य को चढ़ा हुआ है। इसलिए धार्मिक लोगों के पास, साधू, संतों के पास जीवन जीने की 'कला' सिखाने वाले ट्रेनर्स के पास दौड़ता-भागता रहता है। परिणामस्वरूप सिद्धांतों को समझने में ही स्वयं की शक्ति को क्षीण करता है।

वास्तव में आत्मज्ञान जैसा कोई राहगीर नहीं है। पवित्रता जैसा कोई मोक्ष नहीं है, हरेक के प्रति शुभ-भावना, करुणा व सेवाभाव जैसी कोई शक्ति नहीं है। ऐसी समझ पैदा करने के लिए हर रोज़ स्वयं से बात करने के लिए समय निकालना चाहिए। मनुष्य सारे विश्व की बातों में बहुत समय वेस्ट करता है, लेकिन स्वयं को संभालने की उत्सुकता ही नहीं रखता। बूढ़ा होने पर ही परमात्मा को याद करने का समय है, ऐसा आरक्षित समय रखना किसी भी धर्म में नहीं लिखा है। परमात्मा द्वारा प्रदान किये गये क्षण-क्षण परम शक्ति का प्रसाद समझ और उनकी इज़्ज़त रख प्रसन्नता पूर्वक स्वयं के कार्यों एवं जवाबदारी को निष्ठापूर्वक अदा करना ही सच्ची सेवा है। 'अर्थ' के सिवा सब व्यर्थ है, ऐसी संकीर्ण विचारधार ने विराट मनुष्य को कमज़ोर बनाकर रखा है। कबीर ने कहा है - 'हे मानव भीतर की चीज़ तुझे नहीं दिखती' और उसे ढूंढ़ने के लिए बाहर दौड़-भाग कर रहा है। आत्मज्ञान के बिना काशी दौड़ या मथुरा का गमन, सब व्यर्थ है।

ख़्यालों के आईने में...